Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 13/02/2020 Accepted on : 25/02/2020 Publication Date: 28/02/2020

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन लिंग के सन्दर्भ में

मिथलेश गंगवार
प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, ज्योति कालेज आफ मैनेजमेन्ट सांइस एन्ड टेक्नालोजी, बरेली, (उत्तर प्रदेश) भारत

सारांश : सांवेगिक परिपक्वता के बिना बालक समाज में रहने योग्य नहीं बन सकता सांवेगिक परिपक्वता के द्वारा बालकों में अपने संवेगों को नियन्त्रण करने की योग्यता आ जाती है। इस अध्ययन में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता को अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन उसकी विभिन्न विमाओं के आधार पर करना है। उद्देश्य को ध्यान में रखकर यह परिकल्पना बनायी गयी कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई भी सार्थक अन्तर नहीं है। इस अध्ययन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए डॉ0 यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा बनाये गये उपकरण सांवेगिक परिपक्वता मापनी का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में पीलीभीत जनपद में बीसलपुर तहसील के चार विद्यालयों से 60 छात्र तथा 40 छात्राओं का चयन किया गया है। इस प्रतिदर्श को चुनने के लिए सर्वेक्षण एवं वर्णनात्मक विधि का चयन किया गया है। सांवेगिक परिपक्वता मापनी को छात्र/छात्राओं पर लगाने के बाद प्राप्त हुआ कि उच्च माधमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र तथा छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया गया।

संकेत शब्दः: सांवेगिक परिपक्वता, परिकल्पना, उपकरण, प्रतिदर्श ।

१ प्रस्तावना :

बच्चों का संवेगात्मक वातावरण उसके व्यक्तित्व के भावनात्मक तत्व और निश्चित पदार्थो, व्यक्तियों और परिस्थितियों के प्रति उसके भाव से निर्मित होता है। किशोरावस्था जीवन का ऐसा समय होता है। जब बालकों में क्रोध और किसी चीज को पाने की ललक होती है। इस समय में जो अच्छा लगता है वही सही है। इस उम्र में उनके लिए क्या गलत है और क्या सही है इसका ज्ञान कराने के लिए बच्चों में सांवेगिक परिपक्वता का ज्ञान होना जरूरी है। बिना सांवेगिक परिपक्वता के बालक जीवन में आगे बढ़ने में असक्षम रहता है। बच्चों में सांवेगिक परिपक्वता का पता लगाने के लिए पीलीभीत जनपद में बीसलपुर तहसील के चार उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा–11 व 12 के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन किया गया है।

२ सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :

नन्दा एवं चावला (2010) नें उम्र और परिवार की स्थिति के आधार पर शहरी तथा ग्रामीण लड़कियों तथा लड़को पर सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन किया इसके लिए डॉ0 यशवीर सिंह तथा डॉ0 महेश भार्गव द्वारा चयनित परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया।

चतुर्वेदी एवं कुमार (2014) ने उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों पर सांवेगिक परिपक्वता तथा उपलब्धि परीक्षण का अध्ययन किया तथा निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- सांवेगिक परिपक्वता के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर तथा किशोरियों के बीच अन्तर सार्थक है।
- सांवेगिक परिपक्वता के स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में उच्च माध्यमिक स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सांवेगिक परिपक्वता के आधार पर सरकारी तथा अर्द्धसरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

निखत एवं आफाक (2015) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता तथा उपलब्धि परीक्षण के बीच सम्बन्ध के बारे में अध्ययन किया।

३ शोध उद्देश्य :

उपकरण की विमाओं के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :–

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।

४ शोध समस्या का सीमांकन :–

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र पीलीभीत जिला है। इसके अन्तर्गत बीसलपुर तहसील के चार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–11 व 12 के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन किया है।

५ अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि, वर्णनात्मक विधि का चयन किया।

सांख्यिकीय विधि :–

सर्वेक्षण एवं वर्णनात्मक विधि से प्राप्त आंकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया प्रस्तुत शोध कार्य परिकल्पना का परीक्षण साख्यिकीय विधियों द्वारा करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट आदि का प्रयोग किया।

शोध उपकरण :–

शोधार्थी ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिका परिपक्वता की जाँच करने हेतु डॉ0 यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित मानकीकृत परीक्षण (EMS) का प्रयोग किया।

समष्टि एवं प्रतिदर्श :–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन लिंग के आधार पर करने के लिए न्यायदर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 60 छात्र तथा 40 छात्राओं का यचन यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति से किया गया है।

६ परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

इस शोध कार्य में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर जो परिणाम प्राप्त हुए वे इस प्रकार हैं–

तालिका सं,–1

उपकरण के आधार पर विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता व उसकी विभिन्न विमाओं के मध्यमान व परिपक्वता स्तर

सांवेगिक परिपक्वता	M	S.D	स्तर
सांवेगिक स्थिरता	26.99	8.26	अत्यधिक सांवेगिक अस्थिर
सांवेगिक प्रगति	30.47	6.69	अत्यधिक सांवेगिक प्रतिमान
सामाजिक समायोजन	28.66	7.57	अत्यधिक सामाजिक असमायोजित
व्यक्तित्व एकीकरण	26.28	7.93	अत्यधिक व्यक्तित्व विघटन
अनाश्रित	23.85	6.01	अत्यधिक आश्रित
समग्र	136.10	24.465	अत्यधिक सांवेगिक अपरिपक्व

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सांवेगिक रूप से अस्थिर हैं। सांवेगिक रूप से अस्थिर होने के कारण उनमें चिड़चिड़ापन, हठ, गुस्सा करना तथा बातों से मुकर जाने का व्यवहार परिलक्षित होने की संभावना बढ़ जाती है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सांवेगिक रूप से प्रतिगमन की ओर होते हैं यह बच्चे ऐसे होते हैं कि उनमें वातावरण के सापेक्ष नकारात्मक क्षमता जल्दी विकसित होती है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सामाजिक रूप से असमायोजित होते हैं अर्थात वे समाज में अनुरूप स्वयं को नहीं ढ़ाल पाते इस स्तर के विद्यार्थी सभी से अलग रहना पसन्द करते है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी विघटित व्यक्तित्व के पाये जाते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सांवेगिक रूप से आश्रित हैं। क्योंकि इस स्तर पर वे बिना मार्गदर्शन के कोई काम नहीं कर सकते हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सांवेगिक रूप से अपरिपक्व हैं इसलिए वे अपने संवेगों पर काबू नहीं कर पाते हैं।

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 13/02/2020 Accepted on : 25/02/2020 Publication Date: 28/02/2020

तालिका सं,–1.1

छात्र तथा छात्राओं में सांवेगिक स्थिरता के मध्यमान अंकों में अन्तर की सार्थकता

न्यादर्श	N	M	S.D.	t	सार्थकता स्तर
छात्र	60	27.50	7.71	0.75	सार्थक नहीं
छात्राएं	40	26.22	9.09		

तालिका–1. 1के अवलोकन से ज्ञात होता है कि छात्रों में सांवेगिक स्थिरता का मध्यमान (27.50) छात्राओं में सांवेगिक स्थिरता के मध्यमान (26.22) से अधिक है अर्थात छात्रों में छात्राओं की तुलना में सांवेगिक स्थिरता का स्तर उच्च प्रतीत होता है। परन्तु मध्यमानों में .05 स्तर पर t की सार्थकता ज्ञात करने हेतु .75 सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

इस निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्रायें सांवेगिक रूप से एक समान स्थिर होते हैं।

तालिका सं,–1.2

छात्र तथा छात्राओं में सांवेगिक प्रगति के मध्यमान अंकों में अन्तर की सार्थकता

न्यादर्श	N	M	S.D.	t	सार्थकता स्तर
छात्र	60	30.67	6.54	0.36	सार्थक नहीं
छात्राएं	40	30.17	6.97		

तालिका–1.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि छात्रों में सांवेगिक प्रगति के मध्यमान (30.67) छात्राओं में सांवेगिक प्रगति के मध्यमान (30.17) से अधिक है अर्थात छात्रों में छात्राओं की तुलना में सांवेगिक प्रगति का स्तर उच्च प्रतीत होता है परन्त .05 सार्थक स्तर पर t मान देखने से स्पष्ट होता है कि छात्र तथा छात्राओं के मध्यमान में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं,–1.3

छात्र तथा छात्राओं में सामाजिक समायोजन के मध्यमान अंकों में अन्तर की सार्थकता

न्यादर्श	N	M	S.D.	t	सार्थकता स्तर
छात्र	60	28.63	7.02	0.04	सार्थक नहीं
छात्राएं	40	28.70	8.43		

तालिका–1.3 छात्रों में सामाजिक समायोजन का मध्यमान (28.63) छात्राओं के सामाजिक समायोजन के मध्यमान (28.70) से कम है अर्थात छात्राओं में छात्रों की तुलना में सामाजिक समायोजन का स्तर उच्च प्रतीत होता है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का मानक विचलन अधिक है। t मान को देखने से पता चलता है कि छात्रों की तथा छात्राओं की सामाजिक समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्रायें एक समान स्तर तक सामाजिक समायोजन कर पाते हैं।

तालिका सं,–1.4

छात्र तथा छात्राओं में व्यक्तित्व एकीकरण के मध्यमान अंकों में अन्तर की सार्थकता

न्यादर्श	N	M	S.D.	t	सार्थकता स्तर
छात्र	60	27.68	7.84	2.34	0.05
छात्राएं	40	23.68	7.62		

तालिका–1.4 छात्र तथा छात्राओं में व्यक्तित्व एकीकरण के मध्यमान अंकों में अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक है सांवेगिक परिपक्वता की इस विमा पर छात्राों का मध्यमान (27.68) छात्राओं के मध्यमान (23.68) से अधिक है अर्थात छात्रों का व्यक्तित्व एकीकरण छात्राओं की अपेक्षा कम है।

तालिका सं,–1.5

छात्र तथा छात्राओं में अनाश्रित के मध्यमान अंकों में अन्तर की सार्थकता

न्यादर्श	N	M	S.D.	t	सार्थकता स्तर
छात्र	60	23.68	5.11	0.30	सार्थक नहीं
छात्राएं	40	24.07	7.22		

तालिका–1.5 छात्रों में अनाश्रित का मध्यमान (23.07) से अधिक है अर्थात छात्राओं में छात्रों की तुलना में अनाश्रित का स्तर उच्च प्रतीत होता है। t (0.30) देखने से स्पष्ट होता है कि छात्र तथा छात्राओं के मध्यमान में सार्थक अन्तर नहीं है।

७ निष्कर्ष :

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है यह आंशिक रूप से स्वीकृत की गयी है सांवेगिक परिपक्वता की विमा सांवेगिक स्थिरता, सांवेगिक प्रगति, सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व एकीकरण, अनाश्रित व सम्पूर्ण सांवेगिक परिपक्वता छात्र व छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अतः इनके लिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। परन्तु व्यक्तित्व एकीकरण विमा पर छात्रों व छात्राओं में सार्थक अन्तर 0.05 स्तर पर पाया गया इसलिए 0.05 स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है इस विमा पर छात्राओं का व्यक्तित्व छात्रों की तुलना में कम विघटित पाया गया।

८ सुझाव :

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण करने वाले अधिकारियों को पाठ्यक्रम में बदलाव करने चाहिए। पाठ्यक्रम में सांवेगिक परिपक्वता को विकसित करने वाले पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता बढ़ाने के लिए शिक्षकों को शिक्षण विधियों में सुधार करना चाहिए।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता बढ़ाने के लिए विद्यालय के साथ–साथ परिवार को तथा अभिभावकों को भी समुचित प्रयास करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कपिल, एच0के0 (2006). सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।
2. गुप्ता, एस0पी0 (2008). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन इलाहाबाद–शारदरा पुस्तक भवन।
3. भार्गव, महेश (2001), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा–एच0पी0 भार्गव बुक हाऊस।
4. Nanda, P.K. and Chawla, Asha (2010) Impact of age and family type of emotional maturity of unbar adolescent Girls, Industrial psychology journal vol. 19 Issue 1 PP- 37-40 Do 1-10 4103/09726748.77634.
5. Chaturvedi, Poonam & Kumar Narendra (2014). A study of higher secondary students emotional maturity and achievement International general of research and development in technology and management science kalish ISBN-978-1-63102-445-0 vol. 21 Issue 1.
6. Nikhat, Yasinin Sharrq & Neeta Thaqib (2015) comparative study of emotional maturity of secondary school students in relation to academic achievement. The international journal of social science and humanities invention volume 2 Issued 0.6 2015 page no. 1437,1444 ISSN-23-2031